Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

मंचीय कविता का स्वरूप

डॉ. मारोती यमुलवाड
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग
बलभीम महाविद्यालय, बीड
मो. नं. - 87939697708

कविता मानव सभ्यता के आरंभ से ही भावों, विचारों और अनुभवों को अभिव्यक्त करने का सबसे सुंदर माध्यम रही है। लेकिन यह केवल शब्दों का खेल नहीं, बल्कि हृदय की गहराइयों से निकली भावनाओं की लहर है, जो पाठक या श्रोता के मन में कंपन उत्पन्न करती है। कविता की प्रमुख विशेषताओं में भाव-प्रधानता, कलात्मक अभिव्यक्ति, छंद अथवा लय, तथा भाषा-सौंदर्य प्रमुख हैं। पारंपरिक कविता प्रायः छंदबद्ध रही है, जबकि आधुनिक काल में मुक्तछंद का विकास हुआ, जिसमें भाव-प्रवाह को प्रधानता दी गई। जयशंकर प्रसाद कविता को हृदय की अनुभूति की अभिव्यक्ति मानते हैं, जबकि रामचंद्र शुक्ल के अनुसार कविता हृदयगत भावों का कलात्मक रूप में प्रस्तुतीकरण है। आधुनिक काल में कविता के विभिन्न रूप विकसित हुए हैं, जिनमें मंचीय कविता का विशेष महत्व है। लिखित कविता और मंचीय कविता, दोनों के स्वरूप, उद्देश्य और प्रभाव क्षेत्र भिन्न हैं, किंतु साहित्यिक परंपरा में दोनों का अपना स्वतंत्र महत्व है।

मंचीय कविता : परिभाषा और स्वरूप

मंचीय कविता से आशय उस काव्य-रचना से है, जो मूलतः मंच पर प्रस्तुत किए जाने के उद्देश्य से निर्माण की जाती है तथा जिसकी प्रभावशीलता पाठ से अधिक वाचिक प्रस्तुति, भाव-भंगिमा, लय, उच्चारण और श्रोता-प्रतिक्रिया पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि - मंचीय कविता वह कविता है जो कवि की आवाज़, देह-भाषा और मंचीय ऊर्जा के माध्यम से श्रोता तक पहुँचकर तात्कालिक प्रभाव उत्पन्न करती है।

'मंचीय कविता' वह काव्य-रूप है जिसमें कवि मंच से मौखिक रूप में अपनी रचना का पाठ करता है और श्रोता प्रत्यक्ष रूप से उसका रसास्वादन करते हैं। इसमें तीन तत्व अनिवार्य होते हैं - कवि की मंच पर उपस्थिति, काव्य का मौखिक प्रस्तुतिकरण तथा श्रोताओं की सामूहिक भागीदारी। इस प्रकार मंचीय कविता एक जीवंत और अंतःक्रियात्मक माध्यम है, जिसमें कवि और श्रोता के बीच प्रत्यक्ष संवाद स्थापित होता है। कवियों और रचनाकारों द्वारा अपनी रचनाओं का सार्वजनिक मंच से वाचन (पाठ) करना तथा प्रत्यक्ष श्रोताओं द्वारा रसास्वादन (आनंद की अनुभूति) करना ही 'मंचीय कविता' कहलाता है।

मंच वह स्थान है जहाँ कवि, वक्ता या कलाकार श्रोताओं अथवा दर्शकों के समक्ष उपस्थित होकर कुछ कहता है या अपनी किसी कला का प्रदर्शन करता है। 'मंच' शब्द का निर्माण मंच धातु (भ्वा. आत्म. सक. अर्थ धारणा करना, ऊँचा करना) में 'घञ्' प्रत्यय से निर्मित पुल्लिंग संज्ञा है। जिसका अर्थ है - खाट्, खटिया, सभा समितियों में ऊँचा बना हुआ मण्डप जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने कोई कार्य किया जाये। स्टेज, रंगमंच, विशिष्ट क्रियाकलायों के लिए उपयुक्त क्षेत्र जैसे राजनीतिक मंच आदि होते है।[1]

साधारणत मंच का अर्थ माचा(खटिया)[2] का पर्यायवाची होता है। मंच का अर्थ पलंग, प्रतिष्ठा का स्थान, रंगमंच, व्यास गद्दी आदि से भी लगाया जाता है।[3] मंच को अंग्रेजी में 'प्लेट फार्म' कहते हैं। 'मंच' पुल्लिंग (सं.) मुख्यतः ऐसे बड़े चबुतरे को कहते हैं जो ईंटों, पत्थरों आदि के पायो, खम्भों या बासों और लकड़ी के तख्तों से पाटकर किसी विशिष्ट कार्य के लिए बनाया गया हो। यह एक ऐसे क्षेत्र का वाचक है जिसमें कुछ विशेष कार्य होते है, जैसे- साहित्यिक मंच, राजनीतिक मंच आदि।[4]

मंच अपनी बात स्वतन्त्र और स्वच्छन्द रूप से रखने का सर्वोत्तम स्थान है। मंच प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का अन्तिम लक्ष्य है। जब मंच को नाट्य व्यापार से जोड़ दिया जाता है, तो इसे 'रंगमंच' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। अब 'मंचन' शब्द का अर्थ ही नाट्य व्यापार हो गया है।[5]

"आज रंग के अतिरिक्त दूसरे शब्दों के साथ भी मंच शब्द का प्रयोग होने लगा है जैसे-राजनीतिक मंच, कथामंच, लीलामंच, नागर मंच, मंच चित्र, मंचव्यवस्था, मंचक, मंच पंचालिका आदि। वैसे मंच शब्द की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जब यह किसी शब्द के पूर्व लगता है तो इसका अर्थ बहुत ही सीमित हो जाता है और जब यह किसी शब्द के पीछे लगता है तो इसका अर्थ बहुत व्यापक हो जाता है।"[6]

मंच के भेद

मंच के दो मुख्य भेद हैं:

1. प्रत्यक्ष मंच: वक्ता, कवि या कलाकार स्वयं श्रोताओं तथा दर्शकों के समक्ष उपस्थित होकर कुछ कहता या अपनी कला प्रदर्शित करता है।
2. अप्रत्यक्ष मंच: इन मंचों पर वक्ता अथवा कलाकार प्रत्यक्ष उपस्थित नहीं होता, किंतु उसकी रचना, वाणी, चित्र अथवा कला-प्रदर्शन आदि श्रोताओं तथा दर्शकों तक पहुँच जाते है।

- आकाशवाणी के प्रसारणों में कवि, वक्ता तथा संगीतज्ञों के कंठ-स्वर सुने जाते हैं।
- दूरदर्शन तथा फिल्मों के माध्यम से ये कलाकार अपनी कला का चित्रात्मक प्रदर्शन करते हुए दृश्यमान होते हैं।
- पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के माध्यम से उनकी रचनाएँ पाठकों को उपलब्ध होती हैं।

मंचीय कवि की आवश्यक योग्यताएं:

एक प्रभावी मंचीय कवि में निम्नलिखित गुण होने चाहिए:

- **स्वर-संयोजन में निपुणता -** कविता को विभिन्न अनुतानों में प्रस्तुत करने की क्षमता
- **भाव-बोध -** कविता के मूल संवेदन को पूरी तरह समझना और प्रस्तुत करना
- **लचीली प्रस्तुति -** विभिन्न परिस्थितियों में अपनी प्रस्तुति को समायोजित कर सकना
- **काव्य-विवेक -** प्रसंग के अनुसार उचित शब्दों और भावों का चयन करना
- **मौलिकता -** बार-बार एक ही परिहास या उदाहरण न दोहराना
- **श्रोता-जागरूकता -** श्रोताओं की रुचि और मनोदशा को समझना

मंचीय कविता की संरचना:

मंच-व्यवस्था:

- कवि-सम्मेलन प्रायः पंडाल में आयोजित होते हैं।
- मंच की ऊंचाई सामान्यतः 3-5 फुट होती है।
- मंच पर अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता एवं कवि गण बैठते हैं।
- मंच के सामने, दाएं-बाएं श्रोताओं के लिए बैठने की व्यवस्था की जाती है।

ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था:

- बड़ी संख्या के श्रोताओं के लिए ध्वनि-विस्तारक यंत्र (लाउडस्पीकर) का उपयोग अनिवार्य है।
- व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि काव्य-पाठ की स्पष्ट ध्वनि मंचस्थ कवियों एवं श्रोताओं दोनों तक पहुंचे।

संचालक की भूमिका:

- संचालक का दायित्व प्रायः वरिष्ठ कवि को सौंपा जाता है।
- सम्मेलन की सफलता संचालक की कुशलता पर निर्भर करती है।
- संचालक कवियों का क्रम श्रोताओं के मनोनुकूल निर्धारित करता है।
- सर्वप्रथम सभी कवियों का परिचय करवाता है, फिर एक-एक को काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित करता है।

काव्य-पाठ का क्रम:

- सम्मेलन 'वाणी-वंदना' से प्रारंभ होता है।
- कवियों को उनकी काव्य-प्रतिभा एवं प्रसिद्धि के अनुसार क्रम दिया जाता है।
- सामान्य कोटि के कवियों से शुरुआत कर क्रमशः उच्च कोटि की ओर बढ़ा जाता है।
- अंत में अध्यक्ष का काव्य-पाठ होता है।

मंचीय कविता के प्रमुख लक्षण: सरल शब्द-विधान, सहज एवं मुहावरेदार भाषा, स्थूल तथा प्रतीकात्मक बिम्बों की नवीनता, छन्दबद्धता, लयात्मकता, सशक्त शब्द-योजना, उच्च सम्प्रेषणीयता, करुणा एवं मार्मिक अनुभूति, आत्माभिव्यक्ति, राष्ट्रीय प्रेरणा, आत्मगौरव, विषय-वस्तु का साधारणीकरण, भावों की सबलता, सामयिकता, सामाजिक विकृतियों का विरोध, कुरीतियों पर व्यंग्य, जन-चेतना एवं जन-संवेदना की अभिव्यक्ति, लोक-हृदय का सम्प्रकाशन, रोचकता, सीमित प्रतिबद्धता तथा सामयिक मूल्यों का निर्वाह।

मंचीय कविता की विशेषताएँ

मंचीय कविता वह काव्य-रूप है जो मुख्यतः सुनने और देखने के लिए रचा जाता है, न कि केवल पढ़ने के लिए। इसका प्रभाव कवि के शब्दों के साथ-साथ उसके प्रस्तुतीकरण पर भी निर्भर करता है। मंचीय कविता की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

1. श्रव्य प्रभाव:

- मंचीय कविता कानों से पहले दिल तक पहुँचती है।
- लय, ताल, गति, तुक और उच्चारण अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं।

- शब्दों का चयन ऐसा होता है कि वे बोलते समय प्रभाव पैदा करें।

2. सरल और प्रभावशाली भाषा:

- भाषा प्रायः सरल, बोलचाल की, सीधी और स्पष्ट होती है।
- कठिन शब्दावली या अत्यधिक क्लिष्ट बिंबों से बचा जाता है ताकि श्रोता तुरंत जुड़ सकें।

3. संप्रेषणीयता:

- मंचीय कविता का उद्देश्य श्रोता तक बात तुरंत और स्पष्ट रूप से पहुँचाना होता है।
- विचार ऐसे ढंग से रखे जाते हैं कि पहली बार सुनने में ही भाव समझ आ जाए।

4. भावात्मक तीव्रता:

- इसमें वीर रस, हास्य, व्यंग्य, करुणा, प्रेम, राष्ट्रभाव आदि रसों की तीव्र अभिव्यक्ति होती है।
- भावों का उतार-चढ़ाव श्रोताओं को बाँधे रखता है।

5. प्रस्तुति-केंद्रित काव्य:

- मंचीय कविता केवल रचना नहीं, एक परफॉर्मेंस होती है।
- कवि की आवाज़, हाव-भाव, चेहरे के भाव, ठहराव (pause) कविता का हिस्सा बन जाते हैं।

6. तत्काल प्रभाव:

- मंचीय कविता का प्रभाव तुरंत पड़ता है—तालियाँ, ठहाके, सन्नाटा या जयकार।
- इसमें दीर्घ चिंतन से अधिक तात्कालिक संवेदना महत्त्वपूर्ण होती है।

7. समसामयिक विषयवस्तु:

- सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत जीवन से जुड़े समकालीन विषय प्रमुख होते हैं।
- श्रोता अपने जीवन की झलक कविता में देख पाते हैं।

8. पुनरुक्ति और आवृत्ति का प्रयोग:

- कुछ पंक्तियाँ या शब्द जानबूझकर दोहराए जाते हैं ताकि प्रभाव गहरा हो।
- यह मंचीय स्मरणीयता (memorability) बढ़ाता है।

9. श्रोता-संवाद:

- मंचीय कविता अक्सर श्रोताओं से सीधा संवाद करती है।
- प्रश्नात्मक शैली, व्यंग्यात्मक संकेत, या सामूहिक प्रतिक्रिया का आह्वान होता है।

10. साहित्यिक शुद्धता से अधिक प्रभाव:

- शास्त्रीय नियमों से अधिक महत्त्व प्रभाव और सम्प्रेषण को दिया जाता है।
- यह मंचीय कविता को जनसुलभ बनाता है।

कविता और मंचीय कविता में अन्तर:

कविता और मंचीय कविता का उद्गम मूलतः समान है, क्योंकि दोनों का स्रोत कवि-प्रतिभा, अनुभूति और अभिव्यक्ति है। तथापि, सृजन-प्रक्रिया, प्रस्तुति-विधान, सम्प्रेषण और आस्वादन की दृष्टि से दोनों में स्पष्ट भिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। ये भिन्नताएँ मंचीय कविता के क्रमिक विकास के साथ और अधिक स्पष्ट होती गई हैं।

ग्राम्य गोष्ठियों से लेकर अखिल भारतीय स्तर के काव्य-मंचों पर प्रस्तुत की जाने वाली कविताओं के प्रकृतिगत विश्लेषण के आधार पर कविता और मंचीय कविता के मध्य निम्नलिखित अन्तर स्पष्ट होते हैं—

1. प्रेरणा और विषयवस्तु: कविता मुख्यतः शाश्वत जीवन-मूल्यों से प्रेरित होती है, यद्यपि उसमें सामयिक संदर्भों की अनुगूँज भी मिलती है। इसके विपरीत मंचीय कविता मुख्यतः सामयिक विषयों पर केन्द्रित होती है तथा उसमें शाश्वत मूल्यों का समावेश अपेक्षाकृत सीमित रहता है।

2. सृजन-प्रक्रिया: कविता की रचना-प्रक्रिया सामान्यतः मंथर गति से होती है, जबकि मंचीय कविता की निर्माण-प्रक्रिया प्रायः त्वरित गति से होती है।

3. संरचना: कविता प्रायः प्रबन्धात्मक रूप में होती है, वहीं मंचीय कविता अधिकांशतः मुक्तक-प्रधान होती है।

4. आस्वादन का स्तर: कविता के आस्वादन हेतु अपेक्षाकृत उच्च बौद्धिक क्षमता की आवश्यकता होती है, जबकि मंचीय कविता का आस्वादन सामान्य बौद्धिक धरातल पर सम्भव होता है।

5. साधारणीकरण: कविता में साधारणीकरण की प्रक्रिया अपेक्षाकृत मन्द होती है, जबकि मंचीय कविता में यह प्रक्रिया तीव्र होती है।

6. श्रोता/पाठक की भूमिका: कविता प्रायः पाठक की रुचि से अप्रभावित रहती है, जबकि मंचीय कविता श्रोताओं की रुचि, प्रतिक्रिया और अपेक्षाओं से प्रभावित एवं परिचालित होती है।

7. परिणति: कविता की परिणति अनिवार्यतः फलागम में होती है, जबकि मंचीय कविता में फलागम आवश्यक नहीं होता।

8. कथ्य और शिल्प: कविता में कथ्य और शिल्प का संतुलित सौष्ठव अथवा शिल्पगत उत्कृष्टता प्रमुख होती है। मंचीय कविता में कथ्य और शिल्प सामान्य स्तर के होते हैं, यद्यपि कभी-कभी कथ्य अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी हो सकता है।

9. पाठ और प्रस्तुति: कविता में कण्ठ-माधुर्य या पाठ-प्रभाव की विशेष उपयोगिता नहीं होती, जबकि मंचीय कविता में कण्ठ-माधुर्य, पाठ-प्रभावशीलता और नाटकीयता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

10. बिम्ब-विधान: कविता में बिम्ब-विधान प्रायः सूक्ष्म और विराट होता है, जबकि मंचीय कविता में बिम्बात्मकता की अपेक्षा सपाट एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति अधिक आवश्यक होती है।

11. सम्प्रेषण: कविता में सम्प्रेषण की सहजता अनुषंगिक होती है, जबकि मंचीय कविता में सम्प्रेषण की सहजता अनिवार्य मानी जाती है।

12. भावात्मक प्रभाव: कविता में स्थायी गाम्भीर्य का संधान रहता है, जबकि मंचीय कविता प्रायः क्षणिक उत्तेजना उत्पन्न करती है।

13. प्रतिबद्धता: कविता में संतुलित एवं प्रायः प्रतिबद्धता-विहीन दृष्टिकोण प्रधान होता है, जबकि मंचीय कविता में कुछ सीमा तक सामाजिक या वैचारिक प्रतिबद्धता दृष्टिगोचर होती है।

14. भाषा: कविता की भाषा में अभिजात संस्कारों की प्रधानता रहती है, जबकि मंचीय कविता की भाषा जनोन्मुख एवं सहज होती है।

15. दृष्टिकोण: कविता में दर्शन, संस्कृति, इतिहास और शाश्वत जीवन-मूल्यों का आदर्शोन्मुख प्राधान्य रहता है। मंचीय कविता में राष्ट्रीयता, सामाजिकता, आत्मानुभूति, अन्तर्द्वन्द्व और लोकहृदय का यथार्थोन्मुख चित्रण प्रमुख होता है।

16. काव्यशास्त्रीय विधान: कविता में काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का अपेक्षाकृत सम्यक् निर्वाह होता है, जबकि मंचीय कविता में इनका निर्वाह सीमित एवं शिथिल रूप में होता है।

17. छन्द और लय: कविता में छन्दबद्धता और लयात्मकता अनिवार्य नहीं होती, जबकि मंचीय कविता में ये प्रायः आवश्यक मानी जाती हैं।

18. माध्यम: कविता मूलतः पाठ्य विधा है, जबकि मंचीय कविता मूलतः श्रव्य विधा है।

19. अभिव्यक्ति-शक्ति: कविता में लक्षणा का प्रधान्य रहता है, जबकि मंचीय कविता में व्यंजना का।

20. प्रवृत्ति: कविता प्रायः आदर्शोन्मुख होती है, जबकि मंचीय कविता यथार्थोन्मुख प्रवृत्ति की होती है।

21. उद्देश्य: कविता का उद्देश्य मुख्यतः मनन है, जबकि मंचीय कविता का उद्देश्य प्रायः मनोरंजन के साथ तात्कालिक प्रभाव उत्पन्न करना होता है।

मंचीय कविता और लिखित कविता का संबंध: मंचीय कविता को लिखित कविता का विरोधी नहीं माना जा सकता। वस्तुतः यह लिखित कविता का ही एक विस्तारित रूप है, जिसमें प्रस्तुति एक अतिरिक्त आयाम जोड़ती है। कई मंचीय कविताएँ लिखित रूप में भी प्रभावशाली सिद्ध हुई हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में मंचीय कविता का योगदान:

मंचीय कविता ने न केवल हिंदी भाषा को जीवंत बनाए रखा, बल्कि उसे जनता के हृदय से जोड़ने का कार्य भी किया। कवि सम्मेलन, मुशायरे और सार्वजनिक मंचों पर प्रस्तुत की गई कविताएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार का प्रभावी साधन बनीं।

1. जनसामान्य तक हिंदी की पहुँच: मंचीय कविता ने हिंदी को पुस्तकों और कक्षाओं से निकालकर चौपालों, सभागारों और मैदानों तक पहुँचाया। जो लोग औपचारिक शिक्षा से वंचित थे, वे भी मंचीय कविताओं के माध्यम से हिंदी भाषा से परिचित हुए।

2. सरल और सहज भाषा का प्रयोग: मंचीय कवियों ने कठिन संस्कृतनिष्ठ हिंदी के स्थान पर लोकबोली, खड़ी बोली और जनभाषा का प्रयोग किया। इससे हिंदी सहज, ग्राह्य और लोकप्रिय बनी।

3. राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक जागरण: वीर रस, देशभक्ति और सामाजिक सरोकारों से युक्त कविताओं ने हिंदी को राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनाया। जिसमें प्रमुख कवि है:

- **रामधारी सिंह 'दिनकर', सोहनलाल द्विवेदी, हरिवंश राय बच्चन**

इन्होंने मंचीय कविता के माध्यम से हिंदी को जनांदोलन की भाषा बनाया।

4. हास्य-व्यंग्य द्वारा लोकप्रियता: हास्य-व्यंग्य मंचीय कविता की सबसे लोकप्रिय विधा रही। जिसमें प्रमुख कवि है:

- **काका हाथरसी, शैल चतुर्वेदी, सुरेंद्र शर्मा**

इन्होंने हास्य के माध्यम से हिंदी को मनोरंजन की भाषा बनाया, जिससे नई पीढ़ी भी हिंदी से जुड़ी।

स्वतंत्रता आंदोलन और मंचीय कविता: स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मंचीय कविता ने हिंदी को क्रांति की भाषा बनाया। कविताएँ जनता में जोश, साहस और बलिदान की भावना भरती थीं। मंचीय कविताएँ उस समय जनसंचार का सशक्त माध्यम थीं।

आधुनिक युग में मंचीय कविता ने टेलीविजन, सोशल मीडिया, यूट्यूब और डिजिटल मंच के माध्यम से हिंदी को वैश्विक स्तर तक पहुँचाया है। "कविता स्लैम", "ओपन माइक" और ऑनलाइन कवि सम्मेलन नई पीढ़ी को हिंदी से जोड़ रहे हैं।

मंचीय कविता ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में सेतु की भूमिका निभाई है। इसने हिंदी को जीवंत, जनप्रिय और प्रभावशाली बनाया। मंचीय कविता के बिना हिंदी का जनांदोलन अधूरा होता। भविष्य में भी मंचीय कविता हिंदी को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में सक्षम है।

निष्कर्ष:

मंचीय कविता काग़ज़ से मंच तक की यात्रा है - जहाँ शब्द केवल पढ़े नहीं जाते, बल्कि जीए जाते हैं। इसकी आत्मा प्रस्तुति, भाव और श्रोता से जुड़ाव में निहित होती है। मंचीय कविता हिन्दी कविता परंपरा की एक सजीव, लोकतांत्रिक और प्रभावशाली विधा है। जो लिखित शब्दों से आगे बढ़कर स्वर, भाव, लय और प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से श्रोताओं के हृदय तक पहुँचती है। इसने हिंदी को पुस्तकों की सीमाओं से निकालकर जनसामान्य के जीवन से जोड़ा और उसे लोकभाषा, संवेदना और चेतना की भाषा बनाया। सरल अभिव्यक्ति, तात्कालिक प्रभाव, सामाजिक-राष्ट्रीय सरोकार और मनोरंजनात्मकता के कारण मंचीय कविता हिंदी के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम सिद्ध हुई है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आधुनिक डिजिटल युग तक मंचीय कविता ने हिंदी को जीवंत, जनप्रिय और प्रभावशाली बनाए रखा है। अतः यह स्पष्ट है कि हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में मंचीय कविता की भूमिका अविस्मरणीय और अनिवार्य है। मंचीय कविता की लोकप्रियता यह प्रमाणित करती है कि कविता आज भी जीवित है, संवेदनशील है और समाज से संवादरत है।

ग्रंथ सूची:-

1. मानक हिंदी कोश (चौथा खंड) सं. - रामचंद्र वर्मा, पृ. – 254
2. एवं हिंदी शब्द सागर (पाँचवा खंड) पृ. – 2608
3. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ. – 280
4. शब्दार्थ दर्शन – रामचंद्र वर्मा पृ. – 473
5. प्रामाणिक हिंदी कोश – सं. रामचंद्र वर्मा पृ. – 943
6. हिंदी रंगमंच का उद्भव विकास – डॉ.विश्वनाथ शर्मा, पृ. – 05